अष्टाक्षरमंत्र की संक्षिप्त जपविधि

भगवान् शिव के अनेक प्रकार के अष्टाक्षरमन्त्र हैं। उदाहरण के लिये '**ॐ महादेवाय नमः**', '**ॐ महेश्वराय नमः**', '**ॐ शूलपाणये नमः**', '**ॐ पिनाकधृषे नमः**' तथा '**ह्रीं ॐ नमः शिवाय ह्रीं**' आदि। परन्तु इन सभी मन्त्रों के अनुष्ठान की विधि उपलब्ध शास्त्रों में कदाचित् ही पायी जाती है। 'शारदातिलक तन्त्र' में '**ह्रीं ॐ नमः शिवाय ह्रीं**' इस मन्त्र के अनुष्ठान की विधि प्राप्त होती है। उसी विधि का उल्लेख 'अनुष्ठानप्रकाशः' आदि निबंध-ग्रन्थों में पाया जाता है। यहाँ पर हम इसी अष्टाक्षरमन्त्र के जप की विधि का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करेंगे। शिव-मन्त्रों के विस्तृत अनुष्ठान के लिये जो सोपान हैं उनकी चर्चा पहले हो चुकी है। उन सोपानों के अनुसार अनुष्ठान करना सर्वसुलभ नहीं है, इसलिये उनके क्लिष्ट अंगों को छोड़ दिया जाता है। जिस प्रकार पूजा संक्षेप या विस्तार से की जाती है उसी प्रकार मन्त्रों के अनुष्ठान भी संक्षेप एवं विस्तार से किये जाते हैं। यहाँ पर अनुष्ठान की संक्षिप्त विधि ही दी जायगी।

स्नान, आचमन एवं प्राणायाम कर गुरु, गणेश एवं इष्टदेव का पूजन एवं वंदन करने के बाद अनुष्ठानकर्त्ता को तिथि-वार आदि का उच्चारण करते हुए संकल्प लेना चाहिये। संकल्प में जप का प्रयोजन, यथा '**सर्वेष्टसिद्धये**', तथा जप की संख्या का उल्लेख किया जाना चाहिये। इस मन्त्र का पुरश्चरण 14 लाख जप से किया जाता है। संकल्प के बाद हाथ में जल लेकर मन्त्र का विनियोग इस प्रकार करना चाहिये।

विनियोग

ॐ अस्याष्टाक्षरमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः। पङ्क्तिः छन्दः। उमापतिः देवता। सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

विनियोग-वाक्य बोलकर जल को पृथ्वी पर छोड़ दें।

ऋष्यादिन्यास

ॐ वामदेव ऋषये नमः शिरसि। ॐ पङ्क्तिच्छन्दसे नमः मुखे। ॐ उमाकान्तदेवतायै नमः हृदये।

करन्यास

ॐ ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ मं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ यं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास

ॐ ॐ हृदयाय नमः। ॐ नं शिरसे स्वाहा। ॐ मं शिखायै वषट्। ॐ शिं कवचाय हुम्।

ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ यं अस्त्राय फट्।

न्यासोपरान्त इष्ट का ध्यान निम्नलिखित मन्त्र से करें।

ध्यान का मन्त्र

बन्धूकाभं त्रिनेत्रं शशि शकलधरं स्मेरवक्त्रं वहंतं हस्तैः शूलं कपालं वरदमभयदं चारुहारं नमामि।

वामोरुस्तम्भगायाः करतलविलसच्चारुरक्तोत्पलाया

हस्तेनाश्लिष्टदेहं मणिमयविलसद्भूषणायाः प्रियायाः।। (अनुष्ठानप्रकाशः पृ. 128)

ध्यान के बाद इष्ट देवता उमापति की पंचोपचार वा षोडशोपचार अथवा मानसोपचार से पूजा कर संस्कारित माला के द्वारा माला के नियमों के अनुसार[1] उपर्युक्त मन्त्र का पुरश्चरण के लिये 14 लाख जप करें। जप के अन्त में 14 हजार मधुरासिक्त (दूध, घी एवं शहद से आसक्त) आरग्वध (राजवृक्ष) की समिधा से होम करें। होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन तथा मार्जन का दशांश ब्राह्मणभोजन कराना चाहिये।

तर्पण के लिये मूल मन्त्र पढ़कर **'उमापतिं तर्पयामि नमः'** बोलें। इसी प्रकार मार्जन के लिये **'ह्रीं ॐ नमः शिवाय ह्रीं उमापतिं अभिसिञ्चामि'** बोलें। तर्पण तथा मार्जन आदि के बाद भगवान् उमापति की प्रार्थना कर जप के फल को भावना के द्वारा उनके दाहिने हाथ में समर्पित करना चाहिये। तथा फल-समर्पण के प्रतीकस्वरूप थोड़ा सा जल पृथ्वी पर गिरा देना चाहिये।

(यह लेख 'अनुष्ठानप्रकाशः' पर आधारित है।)

❀❀❀❀❀❀

जो मनुष्य सौ वर्षतक उत्कृष्ट तपस्या करता है और वह जो सदा के लिये मांस का परित्याग कर देता है-उन दोनों के कर्म समान हैं अथवा मांस का त्याग उत्कृष्ट होने से तपस्या से अधिक है।

यत् तु वर्षशतं पूर्णं तप्यते परमं तपः।
यच्चापि वर्जयेन्मांसं सममेतन्न वा समम्।।

(महाभारत, अनुशासनपर्व, गीताप्रेस, अध्याय 145 दक्षिणात्यपाठ अ. 11 पृ. 5990)

1. माला के नियमों में माला की प्रार्थनायें, माला का मन्त्र, माला-प्रयोग विधि आदि आते हैं। इनकी जानकारी अन्य लेख में दी गयी है। फिर भी पंचाक्षरमन्त्र जपवाले प्रकरण में भी उन्हें देखा जा सकता है।